IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 18, Issue 05, (Nov.-Dec. 2013) 74-78
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

हिन्दी छायावादी काव्य में मानव–मूल्य'

डा0 परमजीत कौर
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, बरेली कालेज, बरेली
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली

मानव समाज सदाचार पर टिका हुआ है। जिस समाज में उदार मानवीय गुण स्नेह, करूणा, सदाचार, सत्य निष्ठा, प्रकृति तथा पीड़ित मानवता के प्रति प्रेम आदि जितनी प्रमुखता से पोषित होते हैं वह समाज उतना ही श्रेष्ठ समझा जाता है। हमारी भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुंबकम की साधना से पल्लवित तथा पोषित है। इसका सहज प्रभाव हमारे साहित्य पर भी दृष्टिगोचर होता है। इस दृष्टिकोण से हिन्दी साहित्य के लगभग सभी महत्वपूर्ण चरण मानवतावाद के वाहक तथा पोषक रहे हैं। छायावाद हिन्दी साहित्य का वह कालखंड है जिसमें विपुल मात्रा में मानवतावादी साहित्य की रचना हुई है। छायावाद के चार स्तंभ प्रसाद, महाप्राण निराला, पंत तथा महादेवी जी ने अपने साहित्य में भारतीय दर्शन के इस सर्वश्रेष्ठ आस्तिक दृष्टिकोण की साधना की है। इन सभी कवियों के साहित्य में समाज के शोषित, वंचित तथा पीड़ित वर्ग के प्रति करूणा एवं तीव्र संवेदना की भावना दृष्टिगोचर होती है। सर्वात्मवादी जीवन दर्शन से प्रेरित यह कवि प्रकृति को भी जनहित में सम्मिलित करते हैं। छायावाद की प्रमुख प्रकृति रहस्यवाद अर्थात अनंत प्रिय से मिलन की अनुभूति को भी व्यथित मानवता के सम्मुख, जनहित में इस कवियों ने तुच्छ समझ एवं परस्पर सहयोग तथा सहकारिता की भावना से निर्मित श्रेष्ठ समाज के निर्माण हेतु युग परिवर्तन का आहवान अपने काव्य में किया है। सर्वप्रथम हम प्रसाद जी के काव्य का विश्लेषण करें तो देखते हैं कि मानव कल्याण प्रसाद जी की काव्य चेतना का आधारभूत स्वर है। प्रसाद जी की सर्वश्रेष्ठ कृति कामायनी आधुनिक मानव जीवन की समस्त समस्याओं को केवल दिखाती ही नहीं है वरन उनका हल भी प्रस्तुत करती है। अधुना मानव के पास पर्याप्त वैभव, अपार शक्ति, अनंत धन, विपुल भौतिक संपदा नई–नई वैज्ञानिक उपलब्धियां हैं। फिर भी वह अशांत, अतृप्त, दुखी तथा हताश है। उसके लिए जीवन का मूल सुख तथा आनन्द अभी भी आकाश पुष्प बना हुआ है। सच्चे सुख तथा आनन्द की अनुभूति मानव किस प्रकार कर सकता है इसी निमित्त प्रसाद जी ने कामायनी की रचना की। इसका प्रथम सर्ग चिंता है जिसमें आधुनिक मानव की दुखमय चिंता ग्रस्त मनःस्थिति का चित्रण कवि ने किया है तथा अन्तिम सर्ग आनन्द है जिसमें कवि ने आधुनिक मानव के प्रतीक मनु को अखण्ड आनन्द की अनुभूति कराकर कृति का अन्त किया है।

'कामायनी' की रचना से पूर्व ही प्रसाद जी ने 1914 में 'प्रेम पथिक' में इस समस्या की ओर संकेत कर दिया था–

''इस पथ का उद्देश्य नहीं है, श्रान्त भवन में टिके रहना,
किन्तु पहुँचना उस सीमा तक जिसके आगे राह नहीं,
अथवा उस आनन्द भूमि में जिसकी सीमा कहीं नहीं।''

प्रसाद के अनुसार व्यष्टि स्तर पर सुखों का उपभोग अनुचित है, समष्टि के कल्याण निमित्त ही कार्य करने चाहिऐ। कामायनीकार प्रसाद जी की शक्ति रूपिणी नायिका श्रद्धा स्वार्थी मनु को दुःखी मानवता को सुखमय बनाने के निमित्त प्रेरणा देती है–

''औरों को हँसते देखों मनु, हँसों और सुख पाओं,
अपने सुख को विस्तृत कर लो जग को सुखी बनाओं।''

प्रसाद जी जाति–व्यवस्था तथा रूढ़िग्रस्त वर्ण–व्यवस्था को मानवता के विपरीत मानते हैं–

''चार वर्ण बन गए बटाँ श्रम उनका अपना।
शास्त्र यन्त्र बन चले न देखा जिनका सपना।''

हमारी भारतीय संस्कृति में चार पुरूषार्थ बतलाये गये है– धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष। प्रत्येक पुरूषार्थ महत्वपूर्ण है लेकिन काम की महत्ता इन सभी में विलक्षण है। पाश्चात्य संस्कृति मूलतः भोगवादी जीवन दर्शन पर अवलंबित है इसी निमित्त वहाँ काम का तात्पर्य 'भोग विलास' से लिया जाता है। लेकिन हमारी संस्कृति का आदर्श त्यागपूर्वक भोग है। यहाँ 'काम' का अभिप्राय उस प्रमुख कर्तव्य से है जो विधाता ने इच्छा के रूप में सभी के लिए अनिवार्य रूप से सुनिश्चित किया है। भारतीय सन्दर्भ में 'काम' की व्यापकता विशिष्टता इसी निमित्त है कि सद्ग्रहस्य परमात्मा निर्मित इस सुन्दर सृष्टि का भोग त्यागपूर्वक कर सृष्टि सृजन का निमित्त बनता है।

कामायनी (श्रद्धा) काम की व्यापकता के विषय में मनु को समझाती है–

''काम मंगल से मण्डित श्रेय सर्ग इच्छा का है परिणाम'' वह पुनः कहती है–

''जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल।
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओं भूल'।।

आज का आधुनिक मानव जिन बुद्धि विनिर्मित जटिल समस्याओं का सामना कर रहा है, कामायनीकार ने उन विषम समस्याओं को ऋद्धा की मूलवर्तिनी सत्ता द्वारा सुलझाने का प्रयास किया है।

आधुनिक जीवन का सर्वाधिक वैषम्य सुख तथा दुख को लेकर है। भोगविलास लीन देव संस्कृति के विनाश के पश्चात दुःखी, एकाकी, हताश मनु के हृदय में शक्ति स्वरूपा कामायनी (श्रद्धा) आशा का संचार करती है–

''दुःख की पिछली रजनी बीच,
विकसता सुख का नवल प्रभात।
एक परदा यह झीना नील,
छिपाये हैं जिसमें सुख गात।।''

काम विरक्त तथा तप को ही जीवन का एक मात्र सत्य अंगीकृत कर बैठे मनु के भ्रम का निवारण कर, तप तथा भोग के समन्वय पर बल देते हुए कामायनीकार ने गुरूरूपिणी श्रद्धा द्वारा कहलवाया है–

''तप नहीं केवल जीवन सत्य
करूण यह क्षणिक दीन अवसाद
तरल आकांक्षा से है भरा
सो रहा आशा का आहलाद।''

नर–नारी, शासक–शासित, अधिकारी–अधिकृत आदि के मध्य अन्तर समष्टि में अशान्ति का कारण बन जाता है। मनु समरसता के सिद्धान्त को न अपनाने के कारण दुःख पाते है तब काम उन्हें उनकी इसी भूल से अवगत कराता है–

''तुम भूल गये पुरूषत्व के मोह में कुछ सत्ता है नारी की।
समरसता है सम्बन्ध बनी अधिकार और अधिकारी की।।''

मानवता की प्रगति के लिए प्रसाद जी ऐसे शासन की आवश्यकता पर बल देते हैं जो आतंक व भयमुक्त हो। आतंकपूर्ण वातावरण में जनजीवन कुंठा का अनुभव करता है।

''तुम दोनों देखों राष्ट्र नीति,
शासक बन फैलाओ न भीति।
तब देखूँ कैसी चली रीति,
मानव तेरी हो सुयश गीति।।''

कामायनीकार ने जिन मानवीय मूल्यों तथा आनन्द के जिस रूप की प्रतिष्ठा है वह स्पष्टतः आत्मस्थ है। यह वह आनन्द है जिसके विषय में कबीर कहते हैं–

''मन मस्त हुआ तब क्या बोलें
हीर पाया गॉठ गठियाओं,
बार–बार क्यूँ–बाकूँ खोलें।।''

आत्मा–परमात्मा तथा आत्मा एवं जगत की एकता से निहित प्रसाद काव्य में उस आनन्द की व्यंजना है, जिसमें मानव स्वयं को 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से अनुप्रमाणित हो उठता है।

''सब भेदभाव भुलवाकर
सुख दुःख को दृश्य बनाता,
मानव कह रह? यह मै हूँ,
यह विश्वनीड़ बन जाता। ''

छायावाद के द्वितीय अप्रतिम स्तम्भ पन्त जी के काव्य में मानवतावादी विचारधारा का जन्म समाज के अमानवीय तत्वों के विरोध में हुआ है। नवमानववाद से प्रेरित पन्त जी की रचनाओं में, मानवचेतना तथा सृजनवाद का स्वर पुरजोर मिलता है। पन्त जी के काव्य में मार्क्सवादी चिन्तन से प्रभावित कवि चेतना, शोषण के विरूद्ध उभरी है–

''वे नृशंस है, जो जन के श्रम बल से पोषित,
दुहरे धनी, जोंक जग के, भू जिनसे शोषित।

पन्तजी के काव्य पर गाँधीवादी दर्शन का भी प्रभाव मिलता है। कवि पन्त जीवन तथा जगत के प्रति युगान्तकारी विचारों के चिन्तन मनन में लीन होकर एक नवयुग का निर्माण करना चाहते हैं। 'युगान्त' से 'ग्राम्या' तक प्राचीन मान्यताओं का विरोध करके 'पन्त जी' ने नूतन विचारो एवं नवजागरण के लिए नवीन क्रान्ति का समर्थन किया है।

''मानव जग में गिरि कारासी गत युग की संस्कृतियाँ, दुर्धर, बंदी करती हैं मानवता को रच देश जाति की भित्ति अमर।
ये डूबेंगी–सब डूबेंगी पा नव मानवता का विकास,
हँस देगा स्वर्णिम, वज्र लौह छू मानव आत्मा का प्रकाश''।

पन्त जी के अनुसार भौतिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का समन्वय धरा पर स्वर्ग की अवतारणा करने में सफल होगा। भौतिक विकास की तुलना में आध्यात्मिक विकास नगण्य रह गया है। पारस्परिक विद्वेष, छल, भेदभाव, घृणा असन्तोष जैसी तामसिक वृत्तियाँ पर्याप्त भौतिक उन्नति के बाबजूद मानव को सुख के सच्चे शिवद्वार तक ले जाने में बाधा उत्पन्न करती है। वाहय विकास तब तक सुखानुभूति का माध्यम नहीं बन सकता जब तक मानव का अन्तः विकास नहीं हो जाता।

''नव मानवता को निःसंशय,

होना रे अब अन्तः केन्द्रित,
जन–भू स्वर्ग नहीं युग सम्भव
वाह्य साधनों पर अवलम्बित।
वैयक्तिक सामूहिक गति के
द्रुस्तर द्वन्द्वों में जगत खण्डित
ओ अनुभूत जन, भीतर देखा,
समाधान भीतर यह निश्चित।''

पन्त जी वस्तुतः मानवता के कवि है और मानवतावाद ही उनके जीवन दर्शन की परिधि का केन्द्र बिन्दु है। प्रकृति, सौन्दर्य, भौतिकवाद, मार्क्सवाद, राष्ट्रीयवाद, गाँधीवाद, अद्वैत दर्शन तथा आध्यात्मिकता आदि की विचारधाराओं की स्वीकृति तथा विरोधी विचारधाराओं के समन्वय की योजना के मूल में पन्तजी का मानवतावाद एवं मानवकल्याण की भावना ही निहित है।

''जग वैषम्यों को जीवन गति में कर निखिल समन्वित,
खण्ड युगों की संस्कृति को भव संस्कृति में एकीकृत,
धरती के आहत तन मनु को होना शोभित ज्योतित।।''

मानवता पन्त जी के काव्य का प्रधान स्वर है तथा मानव ही उनका एकमात्र आराध्य है–

''मानवता के युग प्रभात में
मानव जीवन धारा
मुक्त अबाध बहे–मानव–जग
सुख स्वर्णिम हो सारा।''

छायावाद के तृतीय अद्वितीय व्यक्तित्व निराला धरती के कवि हैं निराला की मानवतावादी विचारधारा उन कविताओं में विशेष रूप से मुखरित हुई है, जिनमें उन्होनें समाज के पीड़ित, दलित तथा उपेक्षित व्यक्तियों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रदर्शित की है। यह वह दौर था जब गाँधी जी मिल मालिकों, जमीदारों तथा साम्राज्यवादियों में हृदय परिवर्तन का स्वप्न देख रहे थे, जबकि युवा विद्रोह में ही स्वाधीनता को सम्भव समझ रहे थे। निराला जी की क्रान्ति तथा विद्रोही चेतना के मूल में पीड़ित–शोषित मानवता के प्रति प्रेम तथा करूणा का ही भाव है–

सह जाते हो
उत्पीड़न की क्रीड़ा सदा निरंकुश नग्न
हृदय तुम्हारा दुर्बल होता मग्न,
अन्तिम आशा के कानों में
स्पन्दित हम सबके प्राणों में
अपने उर की तप्त व्यथाएँ,
क्षीण कण्ठ की करूण कथाएँ
कह जाते हो
और जगत की ओर ताककर
दुःख, हृदय का क्षोभ त्यागकर
सह जाते हो।''

अन्यत्र वे सड़ी–गली मानवता विरोधी व्यवस्था को मिटाने के लिए रणचण्डी का आहवान करते हुए कहते हैं–

''एक बार बस और नाच तू श्यामा
सामान सभी तैयार
कितने ही हैं असुर, चाहिए तुझको कितने हार
कर मेखला मुंड मालाओं में बन मन–अभिरामा।
एक बार बस और नाच तू श्यामा।''

युवा शक्ति तथा पीडित जनों को जागरण का सन्देश देते हुए महाप्राण निराला कहते हैं–

''जागों फिर एक बार!
पशु नहीं, वीर तुम,
समर–शुरू, क्रूर नहीं,
काल चक्र में ही दबे
आज तुम राजकुंवर! समर सरताज!
है नश्वर यह दीनभाव
कायरता, कामपरता!
ब्रह्म हो तुम
पदरज भर भी नहीं है पूरा यह विश्वभार
जागो फिर एक बार!

तथा

''जल्द–जलद पैर बढ़ाओं, आओ, आओं।

आज अमीरों की हवेली, किसानों की होगी पाठशाला।
धोबी, पासी चमार, तेली खोलेगें अंधेरे का ताला।।
एक पाठ पढेगें, टाट बिछाओं।।''

असहाय तथा दीन दुःखियों की सेवा में महाप्राण निराला ने जीवन का सार्थक्य माना है–

''मैनें मैं' शैली अपनाई
देखा दुःखी एक निज भाई
दुःख की छाया पड़ी हृदय में मेरे
झट उमड़ वेदना आई,
उसके निकट गया मैं धाय
लगाया उसे गले से हाय
हूँ निरूपाय
कहो फिर कैसे गति रूक जाय।''

निराला जी मानव समाज के उन्नयन के लिए प्रभु से प्रार्थना भी करते है–

'दलित जन पर करो करूणा।
दीनता पर उतर आये
प्रभु तुम्हारी शीत, अरूणा।
पार कर जीवन निरन्तर

यह माना जा सकता है कि निराला नवजागरण के मानवतावादी कवि है वे जहॉ एक ओर क्रान्तिधर्मा तथा विद्रोही कवि है, वहीं नवचेतना के वाहक भी है। उन्होनें समाज के रूढिगत बन्धनों का विरोध करते हुए नूतन निर्माण की आकांक्षा पग–पग पर की है।

छायावाद की अन्यतम कवयित्री महादेवी वर्मा जी के काव्य में भी उपेक्षित मानवता के प्रति सहानुभूति तथा सेवा भाव की अभिव्यक्ति हुई है। अनेक कविताओं में उन्होनें दीप के विसर्जन भाव के माध्यम से मानवतावाद का ही समर्थन किया है। कवयित्री ने प्रकृति के विविध उपकरणों के माध्यम से दलितों तथा वंचितों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। अपने चारों ओर के समाज में दैन्य दुख, अभाव और जीवन की जर्जरावस्था देखकर कवयित्री के मन में यह दुविधा जाग्रत होती है कि उसका प्राथमिक कर्तव्य दुःखपूर्ण जीवन की सेवा करना है अथवा रहस्योपासना। महादेवी जी का मत है कि असीम प्रियतम की यौवनसुषमा तथा अम्लान हंसी में जो आकर्षण है उससे भी श्रेष्ठ है, मानव जीवन के क्रन्दन को सुन कर्तव्य पथ पर अग्रसर होना–

''देखूँ सूखी कलियाँ या
प्यारे सूखे अधरों को,
तेरी चिर यौवन–सुषमा
या जर्जर जीवन देखूँ।
x x x x x x x x x
मृदु रजत रश्मियाँ देखूँ
उलझी निद्रा पंखों में,
या निर्निमेष पलकों में
चिन्ता का अभिनय देखूँ।
तुझमें अम्लान हॅसी है,
इसमें अजस्त्र ऑसू जल,
तेरा वैभव देखूँ या
जीवन का क्रन्दन देखूँ।''

महादेवी जी का सन्देश भी यही है कि जिस प्रकार एक लघु सुमन झरकर सम्पूर्ण वातावरण को सुरभित कर देता है, एक लघु दीप अपने जीवन को संसार का तम नष्ट करने को समर्पित कर देता है, उसी प्रकार मानव को भी मानवता के रक्षार्थ अपने क्षणभंगुर जीवन को समाज–सेवा के लिए समर्पित कर देना चाहिए। वह जगत की पीड़ित–मानवतों के कष्टों को दूर करने के निमित्त अपने प्रियतम परमात्मा से प्रार्थना करती है–

''मेरे हॅसते अधर नहीं, जग की आसूँ लड़ियाँ देखों।
मेरे गीले पलक छूओं मत, मुरझाई कलियाँ देखों।।''

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी छायावादी काव्य में मानवतावादी विचारधारा का महत्वपूर्ण स्थान है। इस काव्यधारा में समष्टि धर्म में मानवता का कल्याण करने की तीव्र स्पृहा है। इस युग के प्रबुद्ध कवियों की अन्यतम् विशिष्टता आध्यात्मिक चेतना का प्रबल स्तर है तथा इस छायावादी मानवतावाद का मूलाधार भारतीय आध्यात्मधारा में सन्निहित होने के कारण छायावादी कवि वेदना की अनुभूति करके भी अन्ततः आनन्द तथा आहलाद की भावना का ही पोषण करते हैं। इस छायावादी मानवतावाद पर तत्कालीन राष्ट्रीय–सांस्कृतिक नवजागरण, भौतिक–राजनीतिक–पराधीनता तथा दयानन्द, विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द गाँधी जी एवं गुरूदेव रवीन्द्रनाथ के आदर्शो की प्रेरणा भी निहित है।

सन्दर्भ सूची–

1. प्रसाद : कामायनी
2. प्रसादः प्रेम पथिक
3. पन्त : चिदम्बरा
4. पन्त : युगान्तर
5. पन्त : स्वर्ण किरण
6. पन्त : युगवाणी
7. निराला : परिमल
8. निराला : गीतिका
9. निराला : अनामिका
10. निराला : अणिमा
11. महादेवी वर्मा– यामा
12. छायावादी काव्य में सौन्दर्य चेतना–डॉ0 कृष्णमुरारी मिश्र
13. प्रसाद सुधासागर : डॉ0 सूरजपाल शर्मा